Bihar Board Class 7 Hindi Notes Chapter 12 जन्म-बाधा

जन्म-बाधा Summary in Hindi

सारांश – बेटी में जन्म लेना अर्थात् बाधा ही बाधा। सबसे बड़ी बाधा तो बेटी की पढ़ाई लेकर होती है। लेकिन वर्तमान युग की बेटियाँ अपने जन्मबाधा से दूर होने के लिए दृढ़ संकल्प हो रही हैं। वे प्रयत्नशील हो रही हैं कि किस प्रकार हम शिक्षा के अधिकार को प्राप्त कर सकें। इसी पर आधारित यह लेख है।

गुड्डी बारह वर्ष की लड़की है। घर में ही उसे क, ख इत्यादि का वर्ण ज्ञान मात्र कराया गया है। स्कूल जाने पर उसे प्रतिबंध है। घर के काम-काज से वह परेशान रहती है। वह अपने को अपने घर में बंधुआ मजदूर जैसा अनुभव करती है। एक रोज वह प्रधानमंत्री को पत्र लिखने का निर्णय कर लेती है। गलती-सही का विचार नहीं कर भाव का महत्व देकर छिपकर वह पत्र लिखना आरम्भ करती है।

प्रधानमंत्री जी,
प्रणाम ।

मैंने सुना है, बंधुआ मजदूरों को उनके मालिक से छुड़ाया जा रहा है। मुझे भी छुड़ा दीजिए न । मेरी पढ़ाई नहीं हो सकी है। पप्पा कहते हैं, बाद में देखा जायेगा, बाद में, यानी कभी नहीं। बारह की तो हो गई। मेरे तीनों भाई स्कूल जाते हैं। सब मुझसे छोटे हैं। बबलू जो मुझसे सालभर ही छोटा है, अपने जुठे बर्तन तक नहीं धोता । गुड्डू नौ साल का है। वह तो बबलू से भी ज्यादा कामचोर है। मुन्नू सात साल का है। वह बेचारा अक्सर बीमार ही रहा करता है। रीता पांच साल की है, भीता तान का और छोटकी साल भर की, वह भी भात खाने लगी है।

मैं दिनभर घर के कामों में लगी रहती हूँ। पप्पा कहते हैं, मैं माँ से भी अच्छी रोटियाँ बनाने लगी हैं। लेकिन माँ की तरह सब्जी नहीं बना पाती सो रोज डाँट सुनती हैं।

माँ कहती है, मैं बनाना नहीं चाहती सो बिगाड़ देती हूँ। लेकिन क्या करूँ, मुझसे हो ही नहीं पाता। सारे बर्तन मुझे ही माँजने पड़ते हैं। मुन्नू, रीता, मीता और अब छोटकी सबको मैं टाँगती रहा हूँ ! सबके कपड़े भी मुझे ही धोने पड़ते हैं। एक काम से दूसो काम के बीच मुझे सुस्ताने का भी समय नहीं मिलता, फिर भी सब कहते हैं-गुड्डी धीमर है।

पर साल के पहले वाले साल, मामा जी की जिद पर मेरा नाम स्कूल में लिखवाया गया था, एक महीने ही तो जा पायी। उसी समय छोटकी हो गई, : सो माँ अकेले घर नहीं चला पायी, मुझे स्कूल छोड़ देना पड़ा। मैंने माँ से कहा था, मुझे भी पढ़ने दो, पप्पा ने सुना तो बोले कि जैसे घर ही में ककहरा सीखा है, वैसे ही आगे भी कुछ पढ़ ले । लेकिन घर में मुझे कौन पढ़ायेगा। 'और कब? मैं अपनी मर्जी से स्कूल जा नहीं सकती, किसी से कुछ कह नहीं सकती । क्या यह सत्य है कि बंधुआ मजदूरों को छुड़ा दिया गया है? तो मुझे भी छुड़वा दीजिए न।

आपकी बेटी (गीता) गुड्डी

गइडी पत्र लिखकर आनन्दित है कि अब वह समय दूर नहीं जब उसकी मुक्ति की घोषणा की जायेगी।

https://www.evidyarthi.in/